Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

साठोत्तरी उपन्यासों में नारी

एस. के. खोत
अध्यक्ष,हिंदी विभाग, चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर

सारांश: यह सर्वविदित है कि आधुनिक युग की सबसे महत्वपूर्ण सशक्त तथा प्रिय विधा उपन्यास है। उपन्यास में मानव जीवन के सभी पक्षों को समेटने की दृश्टी रहती है, ऐसा कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा । आजादी के बाद भारतीय समाज तथा साहित्य में बदलाव स्पष्ट रूप में देखने को मिलते है । साठोत्तरी शब्द 1960 के बाद की रचनाओं के बारे में कहा जाता है । भारतीय समाज जीवन में पुराने से पुराने गुलाम दलित और नारी है । हमें यह आज के युग में मानना पडेगा कि साहित्य जगत में दलित और नारी का स्थान विशेश रूप से रहा है । दलित तथा नारियों की समस्या आज के काल में नहीं है ऐसा मानना भोलापन ही होगा ।

प्रस्तावना :

दुनिया में नारियों की आधी संख्या है तब भी नारियों का शारीरिक शोशण होता है उसी तरह मानसिक शोषण भी होता है यह हमें दुःख के साथ कहना पडता है । पाश्चात्य संस्कृति, आधुनिकीकरण का प्रभाव नारियों पर पडा है साथ ही साथ धर्म तथा जातिगत संकिर्णता का प्रभाव भी देखने को मिलता है । नारी के विभिन्न पक्षों का अंकन भारतेन्दु काल से होता आया है । यह सच है कि प्रेमचन्द ने नारियों कों सचेत किया और जयशंकर प्रसाद के नारी पात्र पुरातन आदर्शों के प्रतीक बने । सुखद बात यह है कि आज के काल में गलतभरी मान्यता को ठेस लगी है परिणामतः महिला आत्मनिर्भर होकर जागरूकता का प्रयास जोरो से कर रही है । हमें यह भुलना नहीं चाहिए कि प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और इलाचन्द्र जोशी ने भावुक नारी की अपेक्षा स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखनेवाले नारी को गौरवान्वित किया है । अज्ञेय लिखित ‘शेखर एक जीवनी’ उपन्यास की शशि स्वतंत्र तथा संघर्ष करनेवाली है ।

वृंदावनलाल वर्मा का झॉसी की राणी का चरित्र ध्यान खिंचनेवाला है । उस चरित्र में साहस के साथ साथ सौंदर्य और करूणा भी है । हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में निपुणिका किचड में पैदा होकर पवित्र, निर्मल बनती है । भगवतीचरण वर्मा की ‘चित्रलेखा’ उपन्यास की नायिका चित्रलेखा में आसक्ति तथा अनासक्ति का दर्शन होता है । मोहन राकेश के ‘अंधेरे बंद कमरे की नारी’ आधुनिक है किंतु महत्वाकांक्षी है । हिंदी के बडे साहित्यकार नागार्जुन की नारी वर्ग संघर्श पर प्रकाश डालती है । जैनेंद्रकुमार के ‘अनाम स्वामी’ की उदिता घर के बाहर व्यक्ति स्वतंत्रता का पाठ पढाती है तो घर के अंदर, उसके विपरित रहती है । उशा प्रियवंदा का प्रसिध्द उपन्यास ‘पचपन खम्भे लाल दीवारे’ की सुशमा उलझी हुई दिखती है । डॉ. शिवप्रसाद सिंह के ‘अलग अलग वैतारिणी’ में सामाजिक चेतना के साथ साथ वैयक्तिक चेतना का परिणाम आधुनिक युग के नारी पर पडता है । ‘बेघर’ में ममता कालिया ने एक लडकी को कौमार्य तथा कुॅवारेपन की पुरानी कसौटी पर परखा गया है। उषा प्रियवंदा जी ने ‘रूकोजी नहीं राधिका’ में राधिका हर व्यक्ति से अहिस्ता अहिस्ता अलगाव और परिवेश से दूर जाते ही अकेलापन विशेष रूप से अंकित किया है ।

कमलेश्वर के ‘डाक बंगला’ उपन्यास में नारी को अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अनेक शस्त्रों पर चलना पडता है । ममता कालिया के ‘नरक दर नरक’ उपन्यास की विनय गुप्ता की पत्नी सती कॉलेज में प्रवक्ता होने के बावजूद भी उनका पति उनको सहयोग नहीं देता था । आधुनिक काल में लिखा गया ‘अग्निगर्भ’ अमृतलाल नागर का उपन्यास है जिसमें सीमा नामक नारी का अपने ग्रंथो की रॉयल्टी तथा वेतन पति ही लेता है । ‘सुरजमुखी अंधेरे में’ कृष्णा सोबती ने बेबस लडकी की वास्तविकता चित्रित की है, वह एक ऐसी लडकी है जिसके बचपन में विकृत पुरूश की वासना की शिकार बनी है । मन्नु भंडारी का ‘स्वामी’ उपन्यास अत्यंत छोटा है जिसमें प्रेम तथा विवाह का अन्तर्दन्व्द अंकित किया है । अपने नजदिक की विभिन्न समस्याओं के द्वारा नारी की समस्या का अंकन ‘स्वामी’ में किया है । ममता कालिया का ‘एक पत्नी के नोटस्’ उपन्यास की नायिका कविता शिक्षित होने के बाद भी पति के दबाव में है, यह स्पश्ट देखने को मिलता है । ममता कालिया के ‘प्रेमकहानी’ उपन्यास में नायिका वह अपनी शिक्षा हेतु प्रयासरत है किंतु पिता का तबादला बार बार होने से नाना समस्याओं से प्रभावित होकर जया हिम्मत से आगे बढती है । ‘आवॉ’ उपन्यास में चित्रा मुदगल जी ने यौन शोशण का वर्णन कर समाज को सचेत किया है । इस उपन्यास की गौतमी यौन शोषण का प्रतिनिधित्व करती है । विनोद जैसे सौतेले भाई अपनी बहन को वासना का शिकार कर रहे है । इस उपन्यास में ही निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली नमिता यौन शोषण का शिकार है ।

अंत में यह कहना गैर नहीं होगा कि साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों की नारी शोशित रूप से मुक्त होने के लिए प्रयास कर रही है । देह आकर्षण तथा शोषण से आगे जाकर नारी संपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरकर समाज के सम्मुख आ रही है । पुरूष की वह सहचरी है, प्रेरणा है । शोषित नारियों के समस्याओं का स्वर साठोत्तरी उपन्यासों में देखने को मिलता है । हमें गौरव के साथ लिखना होगा कि 1960 के बाद की नारी स्वतंत्र सोच रखनेवाली साथ ही साथ संयमी तथा निर्भिक है । खुला दृष्टिकोन रखनेवाली और मुकाबले करने की शक्ति उनके पास है । आजादी के बाद समाज की गलत मान्यताओं को ठेस लगी है तथा महिला आत्मनिर्भर होकर जागरूकता का प्रयास कर रही है ।

एस. के. खोत, “साठोत्तरी उपन्यासों में नारी ”
Indian Streams Research Journal Vol-3, Issue-7 (Aug 2013): Online & Print